Journal of Communication and Management

ISSN: 2583-617X (Online)

Journal home page: https://jcoma.com

Theoretical Analysis

DOI: 10.58966/JCM2024328

नाट्यषास्त्र में वर्णित संचारीभाव का संचार के वर्तमान परिदृष्य में महत्वः एक अध्ययन

प्रशांत कुमार[1], प्रमोद, कु. पांडेय[2]*

[1]मीडिया अध्ययन विभाग, महात्मा गांधी केन्द्रीय विष्वविद्यालय, मोतिहारी (बिहार)

[2]संचार व मीडिया अध्ययन विभाग, दक्षिण बिहार केंद्रीय विष्वविद्यालय, गया

ARTICLE INFO

Article history:
Received: 08 April, 2024
Revised: 28 April, 2024
Accepted: 18 May, 2024
Published: 20 June, 2024

Keywords:
संचार, संचार दर्षन, नाट्यषास्त्र, संचारीभाव, व्यभिचारीभाव, अभिव्यक्ति, आचार्य भरतमुनि, जन संचार, संचार माध्यम।

ABSTRACT

संचार और संवाद जीवों की स्वाभाविक प्रवृत्तियां हैं। स्थूल रूप में विचार करें तो संचार ही जीवन है और असंचार का अर्थ है मृत्यु । ये वस्तुतः प्राणिजगत की अपेक्षाओं और आवष्यकताओं की पूर्ति तथा जिज्ञासाओं को शांत करने का प्रयास हैं। इस अर्थ में संचार का ये मूलतः भावनात्मक गतिविधियां हैं जिनकी शुरुआत हमारे मन में होती है। हमारी क्रिया–प्रतिक्रिया और हमारे आचार–व्यवहार में मनःस्थितियों की जो भूमिका है उससे किसी को शायद ही इन्कार हो। आधुनिक संचारषास्त्री भी यह मानते हैं कि भाषा, बोली, साहित्य, कला सहित संवाद के अन्य सभी प्रतीकों का संबंध मन की संवेदनाओं से ही है। आचार्य भरतमुनि के नाट्यषास्त्र में मन की इन संवेदनाओं पर व्यापक प्रकाश डाला गया है। नाट्यषास्त्र स्थूल रूप में नाट्य से जुड़ा ग्रंथ भले लगे किंतु सांचारिक दृष्टि से विचार करें तो यह संचार का महाग्रंथ और विष्वकोष बन जाता है। संचार–संवाद की मूल प्रवृत्ति को मनःस्थितियों के अधीन बताकर आचार्य भरतमुनि ने इस क्रम में रसों और भावों– विषेषकर संचारीभावों की जैसी व्याख्या की है वह प्राचीन भारतीय मनीषा की संचार दृष्टि की विषिष्टता को अभिव्यक्त करने के लिए पर्याप्त है। प्रस्तुत शोध पत्र संचार के वर्तमान परिदृष्य में संचारीभावों के महत्व को प्रतिपादित करने वाले लघु शोध प्रबंध पर आधारित और केंदित है। इसमें नाट्यषास्त्र में वर्णित संचारीभावों का सांचारिक अध्ययन कर शोध अध्येता ने यह पाया है कि संचार और संवाद के विभिन्न स्वरूपों के विकास में इन संचारीभावों का विषिष्ट महत्व है।

प्रस्तावना

सामान्य धारणा यही रही है कि नाट्यषास्त्र केवल नाट्यकला से संदर्भित ग्रंथ है जिसमें नाटक, नाट्य और अभिनय तथा इसके आनुषंगिक अंगों पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है। किंतु अध्ययन के क्रम में हम पाते हैं कि नाट्यषास्त्र इसके आगे भी बहुत कुछ है। नाट्यषास्त्र में संचार के विविध स्वरूपों और इसके विविध तत्वों का रुपायण बहुत विस्तार से हुआ है। विषेषकर रसों और भावों का उल्लेख जिस प्रकार किया गया है उससे यह कहा जा सकता है कि नाट्यषास्त्रकार की संचार दृष्टि बड़ी सूक्ष्म है। संचार के विविध तत्वों की सैद्धांतिक और व्यावहारिक व्याख्या और संदेष निरूपण की दृष्टि से यह अप्रतिम महाग्रंथ है। संचार के विविध आयामों का जैसा चित्रण और जैसी व्याख्या यहां दिखती है वैसी किसी अन्य तत्कालीन या परवर्ती साहित्य में नहीं दिखता। इससे ग्रंथकार के लिए भारतीय संचार दर्षन का प्रणेता वाला विषेषण सटीक हो जाता है।

संचार की प्रक्रिया हमारी मनःस्थितियों पर केंद्रित होती है। किसी भी संदेष को सही संदर्भ में समझने के लिए जरूरी है कि जैसा कहा जाए वैसा ही समझा जाए लेकिन कई बार कहा कुछ जाता है और समझा कुछ जाता है। कोई कुछ समझता है, कोई कुछ। हम जानते हैं कि किसी भी दृष्य या घटना विषेष के प्रति दो या दो से अधिक लोगों की लोगों की प्रतिक्रिया और अनुभूति एक जैसी नहीं हो सकती। यहां तक कि एक ही व्यक्ति की प्रतिक्रिया बार–बार एक जैसी नहीं हो सकती। इसी कारण सामाजिक शोध वैज्ञानिक शोधों से भिन्न माने जाते हैं। पानी को बीकर में जितनी बार गर्म करेंगे वह सौ डिग्री से. पर ही खौलेगा पर एक ही तरह की बात पर किसी की प्रतिक्रिया बार–बार एक जैसी हो यह असंभव है। संदेषों की अर्थ निष्पत्ति के कई आधार–आयाम हैं। तात्कालिक परिस्थितियां क्या हैं, प्रेषक या प्रापक की उस समय की मनोदषा कैसी है, घटना विषेष से उसका क्या संबंध है, घटना विषेष के प्रति उसके पास कोई सूचना किस रूप में पहुंची है आदि इन सबका असर संदेष की ग्राह्यता और उसके विष्लेषण पर पड़ता है। संचार इस आषय में अनुभवों का हस्तांतरण भी है। नाट्यषास्त्र में इसपर पर्याप्त प्रकाश डाला गया है।

नाट्यषास्त्र में अभिनय के जिन भेदों का वर्णन है उनपर ध्यान दें तो ये संचार के ही भेद ठहरते हैं। छठे अध्याय के श्लोक संख्या 23 में कहा गया है–

आंगिको वाचकिाष्चैव आहार्यः सात्वकिस्तथा।
चत्वारोद्यभिनया ह्येते विज्ञेया नाट्यसंश्रयः।

अभिनय के इन चार प्रकारों का उल्लेख आठवें अध्याय में भी आया है किंतु नाट्यषास्त्रकार ने चित्राभिनय का उल्लेख अलग से कर मानों संवाद–संचार का चक्र बहुत स्पष्टता से पूरा कर दिया है। संचार–संवाद का पूरा संसार अभिनय के इन पांच प्रकारों में ही समाविष्ट–समाहित है।

***Corresponding Author:** प्रमोद, कु. पांडेय

Address: संचार व मीडिया अध्ययन विभाग, दक्षिण बिहार केंद्रीय विष्वविद्यालय, गया

Email ✉: pp.jagran1@gmail.com

Relevant conflicts of interest/financial disclosures: The authors declare that the research was conducted in the absence of any commercial or financial relationships that could be construed as a potential conflict of interest.

© 2024, प्रशांत कुमार, This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work non-commercially, as long as appropriate credit is given and the new creations are licensed under the identical terms.

आंगकि संचा

शरीर के विभिन्न अंगों के जरिए किया वाला संचार है। जैसे हाथ हिलाकर, आंखें मटकाकर...। इससे भावाभिव्यक्ति आसान और सहज ग्राह्य बनती है।

वाचिक संचार

वाक् अंगों (यथा जीभ–मुंह) के सम्यक इस्तेमाल के जरिए किया जाने वाला संचार इस प्रकार के संचार की श्रेणी में आता है।

सात्विक संचार

मनोभावों के परिवर्तन के जरिए होने वाला संचार जैसे कभी भय से कांपने जैसी स्थिति तो कभी क्रोध से जलने जैसी स्थिति का उत्पन्न होना। प्रेम–स्नेह, प्रणय निवेदन, लालित्यपूर्ण विनोद जैसी स्थिति का चित्रण इस संचार प्रक्रिया में होता है।

आहार्य संचार

यह परिवेष के तादात्मम्य से संबंधित संचार प्रक्रिया है जिसमें रूपसज्जा, वस्त्रसज्जा, रंग संयोजन, घटना से तादात्म्य रखने वाले प्रतिरूपों का सजीव चित्रण होता है। ध्वनि संयोजन से लेकर माहौल के संदर्भ में अन्य सारे प्रयोग इसी के अंतर्गत आते हैं।

यद्यपि सामान्य तौर पर मानवीय संवेदनाओं और संचार के सभी पक्ष उपरोक्त चारों प्रकरणों में समाहित हो जाते हैं लेकिन यह आचार्य भरतमुनि की संचार दृष्टि की सूक्ष्मता है कि इसके अतिरिक्त भी नाट्यषास्त्र का एक पूरा अध्याय (अध्याय–25) चित्राभिनय पर केंद्रित किया है। यह संचार में प्रतीकों के महत्व पर केंद्रित है। इसकी चर्चा संचार के पांचवे स्तंभ के रूप में की जा सकती है।

चित्र संचार

संचार के आधुनिक संदर्भ और परिप्रेक्ष्य में प्रतीकों की भूमिका महत्वपूर्ण है इसलिए संचार की दृष्टि से इनका बड़ा महत्व है। लोगो, ट्रेडमार्क जैसे प्रतीक तो अपेक्षाकृत बहुत आधुनिक संदर्भों से जुड़ते हैं लेकिन आदि काल से मुहरों और राजकीय चिह्नों के साथ ध्वजों और धार्मिक चिह्नों का प्रयोग किसी सत्ता, व्यक्ति, समाज अथवा अन्य तत्संबंधी प्रकरणों के उल्लेख के लिए होता रहा है। हम जानते हैं कि किसी राष्ट्र ध्वज, राजकीय चिह्न, किसी संस्था या संगठन के प्रतीक चिह्न और ऐसे हजारों प्रतीक वास्तव में केवल प्रतीक ही नहीं होते वरन मूल रूप में संबद्ध प्रकरणों के प्रतिनिधि होते हैं। न केवल इन चिह्नों बल्कि हमारे सामान्य वेषभूषा में भी मूर्त–अमूर्त रूप में संदेष ही छिपे होते हैं। पगड़ी, तिलक, दाढ़ी, टोपी, वर्दी के तौरतरीके और स्वरूप देखकर ही हम अनुमान लगा लेते हैं किस बात का संदर्भ किस प्रकरण से है?

आज सोषल मीडिया के विभिन्न प्लेटफार्म पर मनोभावों–मनोदषाओं की अभिव्यक्ति के लिए जिस इमोजी और मिम का इस्तेमाल बढ़ रहा है उसका संबंध और संदर्भ इसी चित्राभिनय से सीधे जुड़ता है। आज पूरे वैष्विक जगत में भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए जिन विविध प्रकारों के इमोजी, स्टिकर और अन्य प्रतीकों का इस्तेमाल हो रहा है उसका मूल भरतमुनि का नाट्यषास्त्र होगा इसपर संभवतः वैसा विचार अबतक नहीं हुआ है जैसा अपेक्षित था। पष्चिमी विद्वान अपने दृष्टिकोण से इसकी व्याख्या कर रहे।

शोध अध्यय्यन का महत्व- रिसर्च गैप की दृष्टि सs

संचार का प्रमुख ग्रंथ सिद्ध करने के आषय से नाट्यषास्त्र पर कई संचारषास्त्रियों ने महत्वपूर्ण कार्य किया है किंतु इसके बावजूद उनका अध्ययन समग्रता में पूरे नाट्यषास्त्र पर केंद्रित दिखता है। केवल संचारीभावों के महत्व के प्रतिपादन की दृष्टि से यह अध्ययन विषेष रूप से महत्वपूर्ण है। इस शोध अध्ययन का एक महत्व इस बात में भी है कि यह इस बात पर नए सिरे से बल देता है कि हमारे प्राचीन ग्रंथों में आधुनिक संचार सिद्धांतों का भी मूल विद्यमान है। नाट्यषास्त्रकार ने यह जोर देकर कहा है कि जितनी विद्या, जितनी कलाएं और जितने षिल्प इस संसार में विद्यमान हैं सबका उल्लेख नाट्यषास्त्र में है। इस ग्रंथ का जितना और जैसा विस्तार है, उसकी तुलना में संचारीभावों का उल्लेख बहुत थोड़े हिस्से में आया है किंतु इसमें भी संचार के विभिन्न पक्षों, खासकर भावाभिव्यक्ति पर जितनी सूक्ष्मता से प्रकाश डाला गया है वह अत्यंत उल्लेखनीय है। वर्तमान शोध अध्ययन का महत्व इस रूप में भी रेखांकित किया जा सकता है कि संस्कृत साहित्य और संस्कृत ग्रंथों में आधुनिक संचार सिद्धांतों का उल्लेख बहुत व्यापकता से किया गया है। एक महत्व इस रूप में भी आया है कि हम भारतीय संचार दर्षन के प्रणेका आचार्य भरतमुनि के संचार विषयक सिद्धांतों का एक सिरा संचारीभावों के उल्लेख में भी पाते हैं। संचार से आधुनिक संचारविद जिस अर्थ की निष्पत्ति करते हैं उसका स्पष्ट उल्लेख संचारीभाव शब्द में भी मिलता है। वर्तमान शोध अध्ययन से इसपर भी सम्यक प्रकाश पड़ता है।

साहित्य अनुषीलन

इस शोध अध्येता ने अपने अध्ययन में ऐसे कई ग्रंथों का अवलोकन किया जिनकी रचना संचार के तत्वों के अनुषीलन की

दृष्टि से हुई है। नाट्यषास्त्र के अतिरिक्त संचार सिद्धांत से जुड़ी पुस्तकों का अध्ययन भी इस क्रम में शोध अध्येता ने गहनता से करने की कोषिष की है। ऐसे ढेरों ग्रंथ नजर से गुजरे लेकिन प्रस्तुत अध्याय में ऐसी पुस्तकों.षोध आलेखों और शोध अध्ययनों का ही उल्लेख किया गया है जो संचारीभावों के महत्व प्रतिपादन की दृष्टि से उल्लेखनीय हैं। इसकारण ऐसे अनेक ग्रंथों का उल्लेख यहां नहीं मिलेगा जिनकी नाट्यषास्त्र से संबंधित होने की दृष्टि से ख्याति तो बहुत है किंतु जिनमें संचारीभावों का अध्ययन ठीक से नहीं हुआ। एक और कारण यह है कि पूर्ववर्ती शोधकर्ताओं की कमियों–कमजोरियों को इंगित करना न इस शोध अध्ययन का उद्देष्य है न ऐसा करना उचित लगता है।

अधिकारी, डा.निर्मल मणि (2013) 1 ने अपनी गवेषणात्मक पुस्तक Theory And Practice Of Communication: Bharatmuni] Makhanlal Chaturvedi National University of Journalism and Mass Communication] Bhopal- Practice Of Communication& Bharatmuni में ने नाट्यषास्त्र के संचार पक्ष पर गहन और सूक्ष्म दृष्टि डाली है। आठ अध्यायों वाली इस पुस्तक में विद्वान लेखक ने यह बार–बार कहा है कि नाट्यषास्त्र भारतीय और विषेषकर हिंदू संचार सिद्धांत का नियामक ग्रंथ है। जिसे निर्मलमणि अधिकारी संचार का साधारण ीकरण माडल कहते हैं उसका प्रारंभ बिंदु वे नाट्यषास्त्र में ही पाते हैं। साधारणीकरण माडल को पहला संचार सिद्धांत कहते हुए निर्मलमणि अधिकारी इसे भारतवर्षीय हिंदू संचार सिद्धांत करते हैं। नाट्यषास्त्र की विषयवस्तु पर संचार की दृष्टि से उन्होंने पर्याप्त ध्यान दिया है। लेकिन समग्रता में नाट्यषास्त्र पर चिंतन के कारण वे नाट्यषास्त्र में वर्णित प्रकरणों का सूक्ष्म अध्ययन करने से रह गए हैं। संचारीभावों का उल्लेख उनकी पुस्तक में शाब्दिक अनुवाद तक सीमित रह गया है जबकि शोध अध्येता का मानना है कि संचारीभाव ही भावाभिव्यक्ति की भावभूमि की संरचना और भावाभिव्यक्ति का प्रस्थान बिंदु है। वे इसकी शाब्दिक व्याख्या से आगे नहीं जा पाए।

अधिकारी, डा.निर्मल मणि (2008) 2 ने रिसर्च पेपर The Sadharanikaran Model and Aristotle Model of Communication: A Comparison के जरिए नाट्यषास्त्र और भारतीय संचार सिद्धांत को तुलनात्मक रूप से अधिक उपयोगी सिद्ध करने का सार्थक प्रयास किया है। इस पेपर के प्रकाशन के बाद उन्होंने साधारणीकरण माडल पर और गंभीरता से दृष्टिपात करते हुए अगले साल इस माडल पर रिसर्च पेपर का प्रकाशन कराया जिसने इस माडल के प्रति विद्वानों का ध्यान आकृष्ट किया।

भट्टाचार्य, कपिल कुमार (2018) 3 ने अपने शोध अध्ययन Natyashastra as a Communication Treaties: An Exploration of possibility for the Present में नाट्यषास्त्र के सभी प्रकरणों में संचार के तत्वों का अनुषीलन बहुत गहनता से किया है। इस दृष्टि से उनका शोध अध्ययन इस शोध अध्येता सहित अनेक लोगों के लिए नाट्यषास्त्र के सूक्ष्म सांचारिक तत्वों का दिग्दर्षन कराने वाला है किंतु संचारीभावों का जिस दृष्टि से उल्लेख किया जाना चाहिए था वैसी दृष्टि शोधकर्ता की नहीं बन पाई। या तो वे समग्र अध्ययन के कारण संचारीभाव पर दृष्टिपात नहीं कर पाए या फिर उनकी दृष्टि इसके सूक्ष्म तत्वों पर नहीं गई। शोध अध्येता भट्टाचार्य के इस निष्कर्ष से समहत है कि नाट्यषास्त्र ने न केवल भारतीय संचार दर्षन के सिद्धांतों का निरूपण बहुत सूक्ष्मता से किया है, तात्कालिक परिवेष में संचार का इतना सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक विष्लेषण कहीं किसी स्तर पर नहीं हो पाया। शोध अध्ययन गुणात्मक रूप में निःसंदेह उच्चकोटि का है और अपने उद्देष्यों में सफल भी है।

भट्टाचार्य, कपिल कुमार (2015) 4 ने भारतीय संचार दर्षन से जुड़ा एक अध्ययन विषेषकर नाट्य दर्षन के आलोक में किया जो Communication from

India Perspective with special reference to Natya Darshan टाइटल से प्रकाशित हुआ था। इसमें नाट्यषास्त्र के आलोक में भारतीय संचार सिद्धांत को समझने का प्रयास संक्षिप्त रूप में किंतु गहनता से हुआ है। इससे शोध अध्येता के नाट्यषास्त्र की संचार दृष्टि पर पकड़ का पता चलता है।

रमण, साकेत एवं अमिता (2016) 5 की पुस्तक भारतीय संचार दर्षन नई दृष्टि इस रूप में बहुत सहयोगी है कि यह कलेवर में संक्षिप्त होकर भी शोध अध्येता को भारतीय संचारदकी विभिन्न प्रवृत्तियों का ज्ञान सूक्ष्मता से कराती है। इसमें लेखक द्वय ने भारतीय संचार दर्षन के विविध पक्षों पर दृष्टिपात करते हुए प्राचीन भारतीय साहित्य और धार्मिक ग्रंथों में प्रभूत संचार सिद्धांतों को रेखांकित किया है। यह स्पष्ट करने की कोषिष की गई है कि भारतीय धर्मग्रंथों का अध्ययन संचार के सिद्धांतों की स्थापना की दृष्टि से महत्वपूर्ण हो सकता है। नाट्यषास्त्र पर थोड़ा ही ध्यान दिया गया है किंतु यह नाट्यषास्त्रकार को भारतीय संचार सिद्धांत का प्रणेता सिद्ध करने की दृष्टि से महत्वपूर्ण पुस्तक है। शोध अध्येता को इससे बड़ी सहायता मिली है।

देवी, डा.कांता (2020) 6 ने अपनी पुस्तक नाट्यषास्त्र और संचार में नाट्यषास्त्र के संचार विषयक तत्वों पर दृष्टि डाली है किंतु यह शोध अध्ययन की दृष्टि से इस कारण बहुत सहायक नहीं हो पाएगी कि इसमें चीजों का सतही विष्लेषण है। लेखिका ने इस प्रतिस्थापना का प्रयास किया है कि नाट्यषास्त्र संचार की दृष्टि से महत्वपूर्ण ग्रंथ है।

यह कोई नई प्रतिस्थापना नहीं है। पुस्तक नाट्यषास्त्र और इसमें संचार के तत्वों से अनजान लोगों का निष्चित रूप से ज्ञानवर्द्धन करेगी किंतु संचार के शोध अध्येताओं के लिए इसमें कोई नई बात नहीं दिखती।

दिसानायके, विमल (1988) 7 ने एषियाई संचार सिद्दांत पर उल्लेखनीय काम किया है। अनेक पुस्तकों और रिसर्च पेपर के जरिए इन्होंने संचार सिद्धांतों को एषियाई परिदृष्य में समझने और समझाने का प्रयास किया है। विषेषकर Communication Theory : The Asian Perspective उनकी उल्लेखनीय कृति है जिसमें नाट्यषास्त्र को एषियाई संचार परंपरा का आदि ग्रंथ बताते हुए विषेषकर बौद्ध साहित्य के संचार पक्ष पर प्रकाश डाला गया है। दिसानायके नाट्यषास्त्र को महत्व देते हैं, उनके सिद्धांत प्रायः मौलिक भी हैं किंतु संचारीभावों का जिक्र उनके संदर्भों में प्रायः नहीं मिलता।

सिंह, ओमप्रकाष (2018) 8 भारतीय संचार दर्षन के विद्वान अध्येता हैं। अपनी पुस्तक संचार के सिद्धांत में उन्होंने पाष्चात्य संचारविदों के साथ भारतीय संचार सिद्धांत के नायकों को भी रखा है। वे नाट्यषास्त्र के रचयिता आचार्य भरतमुनि को आदिम संचार सिद्धांत का प्रणेता कहते हैं। आदि पत्रकार नारद की संचार दृष्टि पर उनका अध्ययन विषिष्ट है। नाट्यषास्त्र में संचार के तत्वों का दिग्दर्षन वे बड़ी स्पष्टता से कराते हैं लेकिन वे स्थायी भावों से ही रस निष्पत्ति मानते हुए संचार में संचारीभावों के महत्व पर उतना ध्यान नहीं दे पाए हैं।

सेबास्टियन, डी (2019) 9 अंग्रेजी के प्राध्यापक हैं और उनका एक रिसर्च पेपर संचारीभावों के महत्व को रेखांकित करने के संदर्भ में उल्लेखनीय है। नाट्यषास्त्रकार ने जिस चित्राभिनय का उल्लेख संचार के प्रमुख प्रकाशित Emoji : Reframing the Theory of Rasaasa भावाभिव्यक्ति के आधुनिक तौर तरीकों में इमोजी के सैद्धांतिक पक्षों पर फोकस करते अध्येता ने यह बतलाने का प्रयास किया है कि संवाद के प्रतीकों का निर्माण कैसे होता है और इसमें नाट्यषास्त्र में वर्णित रसों की भूमिका कितनी है? यह अध्ययन संक्षिप्त किंतु सारगर्भित है और इससे शोध अध्येताओं को नाट्यषास्त्र में वर्णित सिद्धांतों के व्यावहारिक पक्ष को समझने में मदद मिलेगी।

मिश्र, व्रजबल्लभ (1988) 10 कला क्षेत्र से संबंधित विद्वान हैं। उनकी पुस्तक भरत और उनका नाट्यषास्त्र शोध अध्येताओं के नजरिए से बहुत उपयोगी है क्योंकि इसमें लेखक ने गवेषणात्मक पहलुओं को ही फोकस किया है। नाट्यषास्त्र के परिचयात्मक ग्रंथ के रूप में यह बहुत महत्वपूर्ण है। महत्वपूर्ण बात यह भी है कि यह पुस्तक संचार के अध्येताओं की दृष्टि से नहीं है किंतु इसमें संचार दृष्टि व्यापक रूप से झलकती है। शोध अध्येता को इस पुस्तक से बड़ी सहायता मिली है जिसका उल्लेख आभार के रूप में यथास्थान किया गया है। नाट्यषास्त्र पर केंद्रित संचार परक ग्रंथों के अतिरिक्त शोध अध्येता ने कुछ अन्य ग्रंथों का भी अध्ययन किया है। इनका जिक्र शोध अध्ययन के परिषिष्ट भाग में किया गया है।

शोध अध्ययन का उद्देष्य

शोध अध्ययन के शीर्षक– नाट्यषास्त्र में वर्णित संचारी भाव का संचार के वर्तमान परिदृष्य में महत्व से ही इसके उद्देष्य के बारे में प्रारंभिक सूचना मिल जाती है किंतु तब भी यहां शोध अध्ययन के उद्देष्यों के बारे में स्पष्ट रूप से इंगित करना आवष्यक है। वर्तमान शोध अध्ययन के प्रमुख उद्देष्य इस प्रकार चिह्नित किए जा सकते हैं–

- नाट्यषास्त्र संचार की दृष्टि से महत्वपूर्ण ग्रंथ है और इसमें संचार के विविध आयामों पर सम्यक प्रकाश डाला गया है– इस बिंदु पर सम्यक तरीके से विचार इस शोध अध्ययन का प्रमुख उद्देष्य है।
- नाट्यषास्त्र में वर्णित संचारी भाव क्षणिक मनःस्थितियां होने के बावजूद संचार प्रक्रिया का महत्वपूर्ण अवयव हैं इसकी स्थापना इस शोध अध्ययन का प्रमुख उद्देष्य है।
- संचार की पूरी प्रक्रिया में हमारी मनःस्थितियों की बड़ी भूमिका होती है यह स्पष्ट करना भी इस शोध अध्ययन का प्रमुख उद्देष्य है।
- यह शोध अध्ययन संचारीभावों के संचार के वर्तमान परिदृष्य में महत्व की स्थापना पर केंद्रित है। अतः यह स्पष्ट रूप से इस शोध अध्ययन का प्रमुख उद्देष्य है।
- रसों और भावों पर चर्चा के क्रम में प्रायः स्थायी भावों से जुड़ी अवधारणाओं को ही महत्व दिया जाता रहा है। संचारीभावों के महत्व का निरुपण संचार की दृष्टि से भी कम ही दिखता है। इसके महत्व का प्रतिपादन इस अध्ययन का उद्देष्य है।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध कार्य इस मामले में विषिष्ट था कि इसमें नाट्यषास्त्र के संचारीभावों का संचार के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में महत्व पर दृष्टिपात प्रमुख उद्देष्य था। इसलिए...

- प्रथम शोध विधि के रूप में कथ्य विष्लेषण विधि (Narrative Analysis) का उपयोग किया गया। इसके लिए नाट्यषास्त्र के सम्यक अध्ययनोपरांत संचारीभाव से संबंधित प्रकरणों को प्रस्तुत अध्ययन में शामिल किया गया।
- ऐतिहासिक विष्लेषण विधि (Historical Analysis) का इस्तेमाल सहयोगी विधि के रूप में किया गया। इस विधि के माध्यम से नाट्यषास्त्र का समग्र अध्ययन करते हुए संचार के क्षेत्र में अबतक की प्रगति को संचारीभावों के परिप्रेक्ष्य में समझने की कोषिष भी की गई है।
- द्वितीयक सामग्री (Secondary Data) का प्रयोग किया गया है। उपलब्ध द्वितीयक सामग्री की व्याख्या कर उन्हें प्राथमिक सामग्री के रूप में निरूपित करने का प्रयास किया गया है।
- चूंकि यह अध्ययन स्वयं में विषिष्ट प्रकृति का था, अतः अध्ययन उद्देष्यों के अनुरूप ही प्रतिचयन विधि का चयन आवष्यक लगा अतएव उद्देष्यपूर्ण निदर्षन विधि (Purposive Sampling) का चयन किया गया। नाट्यषास्त्र के वैसे ही श्लोकों और प्रकरणों का चयन किया गया जो संचारीभावों से संबंधित हैं तथा वर्तमान संचार परिदृष्य से जिनका सातत्य एवं संबंध स्थापित किया जा सके।

संचारीभावः निरंतर संचरणषील मनःस्थितियां

जीवन व्यापार में हमें अलग–अलग मनःस्थितियों से गुजरना ही पड़ता है। मनोभावों में क्षण–क्षण परिवर्तन आता रहता है। प्रतिपल का यह बदलाव ही जीवन में अनुभूतियों की भावभूमि तैयार करते हुए जीवन को प्रवाहमान बनाता है। ये मनोभाव चूंकि विविध रूपों में संचरणषील होते हैं इसलिए नाट्यषास्त्रकार ने प्रतिपल बदलते इन भावों को संचारीभाव कहा है। नाट्यषास्त्रकार ने इन्हें व्यभिचारी भाव भी कहा है किंतु यहां उसका आषय व्यभिचार के उस सामान्य अर्थ से नहीं है जो वर्तमान में इस शब्द के साथ रूढ़ हो गया है। यह (व्यभिचारी) 'वि' और 'अभि' दो उपसर्गों के साथ गति अर्थक 'चर्' धातु के मिलने से बनने वाला शब्द है जिसका सामान्य अर्थ हुआ– जो विविध प्रकार के रसों की ओर बढ़ते हुए संचरणषील हो।

नाट्यषास्त्रकार आचार्य भरत ने कहा है कि जो वाचिक, आंगिक और सात्विक अभिनयों से युक्त होकर प्रयोग में रसों का अवलंबन लेते हैं वे व्यभिचारी भाव हैं और ये व्यभिचारी भाव ही रसों को प्रतीति के योग्य बनाते हैं। इस प्रकार स्पष्ट

है कि संचार या संवाद प्रेषण से लेकर इनके ग्रहण, अर्थ निष्पत्ति और संदेष को आत्मसात करने जैसे विविध प्रकरणों में संचारीभावों की अपनी विषिष्ट भूमिका है। इनकी कुल संख्या 33 बताई गई है और यह संख्या ही यह इंगित करने के लिए पर्याप्त है कि मानवीय संवेदनाओं पर नाट्यषास्त्र सहित इस प्रसंग से संबद्ध साहित्यों और ग्रंथों में कितनी सूक्ष्मता से विचार किया गया है।

जिन 33 भावों का जिक्र क्षण–प्रतिक्षण बदलते भावों के रूप में किया गया है उनके बारे में विचार करने पर हमें नाट्यषास्त्रकार की विलक्षण मनोवैज्ञानिक दृष्टि का और नाट्यषास्त्र में वर्णित विविध कलाओं के मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों की व्यापकता का अनुभव होता है।

नाट्यषास्त्र के छठे अध्याय में श्लोक संख्या 18 से 21 (गंगानाथ झा ग्रंथमाला में पाठभेद से 19 से 22) तक संचारी भावों के विभिन्न प्रकारों का उल्लेख आया है। इनका वर्णन नाट्यषास्त्रकार ने इस प्रकार किया है–

निर्वेदग्लानिषंकाख्यास्तथौसूया मदः श्रमः।
आलस्यं चैव दैन्यं च चिंता मोहः स्मृतिर्धृतिः।।
(ना.षा. 6-18)
ब्रीडा चपलता हर्ष आवेगो जड़ता तथा।
गर्वो विषाद औत्सुक्यं निद्रौपस्मार एव च।। (ना.षा. 6-19)
सुप्तं विवोधौमर्षष्चाप्यवहित्थमथोग्रता।
मतिर्व्याधिस्तथोन्मादस्तथा मरणमेव च।। (ना.शा. 6-20)
त्रासष्चैव वितर्कष्च विज्ञेया व्यभिचारिणः।
त्रयस्त्रिंषदमी भावाः समाख्यातास्तु नामतः।। (ना.षा. 6-21)

उपर संचारीभावों के अलग–अलग नाम का उल्लेख करते हुए पूरी सूची को श्लोकबद्ध किया गया है। इन्हें क्रमवार और संख्यात्मक रूप से अलग करने पर यह सूची इस प्रकार होती है– 1. निर्वेद, 2. ग्लानि, 3. शंका, 4. असूया, 5. मद, 6. श्रम, 7. आलस्य, 8. दैन्य, 9. चिंता, 10. मोह, 11. स्मृति, 12. धृति, 13. लज्जा, 14. चपलता, 15. हर्ष, 16. आवेग, 17. जड़ता, 18. गर्व, 19. विषाद, 20. औत्सुक्य, 21. निंदा, 22. अपस्मार, 23. सुप्त, 24. विवोध, 25. अमर्ष, 26. अवहित्थ, 27. उग्रता, 28. मति, 29. व्याधि, 30. उन्माद, 31. मरण, 32. त्रास और 33. वितर्क।

चूंकि वर्तमान शोध अध्ययन संचार परिदृष्य में संचारीभावों के महत्व पर ही केंद्रित है इसलिए संचारीभावों की संक्षिप्त विवेचना यहां आवष्यक है।

निर्वेद– दारिर्द्येष्टवियोगाद्यैः निर्वेदो नाम जायते। संप्रधारणनिःष्वासैस्तस्य त्वभिनयो भवेत्।

यह दरिद्रता, रोग–बीमारी, किसी निकट संबंधी या प्रियजन के वियोग आदि से संबंधित मनःस्थिति का द्योतक और संकेतक माना गया है। आधुनिक मनोवैज्ञानिकों की स्पष्ट मान्यता है कि दूसरों की समृद्धि और उन्नति देखकर भीतर–भीतर कुढ़ना और ईर्ष्यावष उन्नति करने वाले का अहित सोचना सामान्य मानवीय प्रवृत्ति है।

ग्लानि

सामान्य अर्थों में ग्लानि से आषय किसी घटना के प्रतिफल स्वरूप मन में उत्पन्न संताप और ऐसी स्थिति से है जिसमें लज्जा से सिर झुक जाए किंतु नाट्यषास्त्रकार के लिए ग्लानि का अर्थ इससे कहीं व्यापक है। सांचारिक दृष्टि से विचार करने पर हम पाते हैं कि ये किसी भी थके–हारे और पराजित मनःस्थिति वाले व्यक्ति के मनोभाव हैं।

शंका

चोरी या किसी अपराध के सिलसिले में गिरफ्तारी, गणमान्य व्यक्ति के प्रति अपराध करने, राजद्रोह और पापकर्म आदि विभावों से इस संचारीभाव की उत्पत्ति होती है। इसकी अभिव्यक्ति बार–बार देखने, मुंह सूखने, पसीना–पसीना होने, जीभ से होठ चाटने, मुंह का रंग उड़ जाने, स्वरभंग, गले से आवाज न निकल पाने या ऐसे अन्य अनुभावों से होती है। यह दृष्य हम आज भी रोजाना देखते हैं जिसका जिक्र नाट्यषास्त्रकार ने हजारों वर्ष पूर्व अपने ग्रंथ में इतने विस्तार से किया है।

असूया

ईर्ष्या–द्वेष के वषीभूत होकर दूसरे के गुणों के प्रति अन्यमनस्कता और तिरस्कार का भाव असूया है। दूसरे की उपलब्धि से उत्पन्न असूया की अभिव्यक्ति दूसरे के दोष प्रदर्शन से और उसकी संपन्नता या ऐष्वर्य से उत्पन असूया का अभिनय सभा में उसके तिरस्कार से किया जाता है।

मद

मद से आषय मादकता, नषा, गर्व, अहंकार, उन्माद, मतवालापन आदि से है। नाट्यषास्त्रकार ने कहा है कि यह मद्य के उपयोग से उत्पन्न व्यभिचारीभाव है किंतु इससे इतर विचार भी मिलते हैं। साहित्यदर्पणकार विष्वनाथ के मतानुसार सम्मोह और आनंद भी मद की ही दषाएं हैं। नाट्यषास्त्रकार का कहना है दृ संत्रास, शोक, भय, हर्ष और इस प्रकार की अन्य परिस्थितियों में मद्यपान जैसी स्थितियां आती हैं। यह शक्ति से उत्पन्न नकारात्मकता का प्रतीक है।

श्रम

श्रम से आषय परिश्रम, अभ्यास, व्यायाम आदि से है। दूरस्थ प्रदेश की यात्रा, किसी साध्य की प्राप्ति की लालसा से की जाने वाली मेहनत और अध्यवसाय भी श्रम ही है। श्रम की शक्ति सकारात्मक होती है इसलिए श्रममेव जयते भी कहा जाता है। परिश्रम का एक संदर्भ अध्यवसाय से भी जुड़ता है। थकान मानसिक भी होती है। आधुनिक संचारषास्त्री कहते हैं कि जनसंचार के उदय में मानसिक थकान को दूर करने का भाव बहुत महत्वपूर्ण रहा है। साप्ताहिक अवकाष, मनोरंजन और अन्य सापेक्ष अवधारणाओं का जन्म इसी प्रक्रिया की उपज है।

आलस्य

किसी कार्य में मन न लगना अलग बात है और मन न लगाना दूसरी बात। इसमें प्रयत्नपूर्वक कार्य को टालने वाला भाव निहित रहता है। यह व्यभिचारीभाव खेद, व्याधि, गर्भावस्था, स्वभाव अतितृप्ति आदि विभावों से प्रायः स्त्रियों और नीच प्रकृति के पुरुषों में उत्पन्न होता है। आलस्य अधम पुरुषों का लक्षण है। चरैवेति–चरैवेति का मंत्र देने वाली भारतीय जीवन पद्धति तो इसे महान शत्रु बताती है। कहा गया है– आलस्यं हि मनुष्यानां शरीरस्थो महान रिपुरू। (नीतिष्लोकाः) किसी भी समाज में आलस्य का सम्मान नहीं दिखता।

दैन्य

यह दीनता से संबंधित भाव है। इसे विनय भाव में स्वीकार करने की मनाही नहीं है लेकिन भारतीय परंपरा हमें एक और सीख देती है कि घबराना नहीं है। चाहे जो परिस्थिति आए हार नहीं मानना है, पलायनवादी नहीं होना है। नाट्यषास्त्र इसी भाव में दीनता का जिक्र व्यभिचारी भाव में करता है और यह भी संकेत देता है कि चिंता–दुःख, नकारात्मकता आदि जीवन के ऐसे पहलू हैं जो जीवन की दिषा और दषा को तय करते हैं किंतु इनको ओढ़ कर खुद को नकारात्मकता में ढाल लेना किसी समस्या का समाधान नहीं हो सकता।

चिंता

नाट्यषास्त्र में कहा गया है–

ऐष्वर्यभ्रंषेष्टद्रव्यक्षयजा बहुप्रकारा तु। हृदयवितर्कोपगता नृणां चिंता समुद्भवति।

अर्थात संपत्ति नाष, भूत–वर्तमान तथा भविष्य को लेकर होने वाली आषंकाएं, मनोनुकूल कार्य में बाधा या व्यवधान या किसी गोपनीय योजना के प्रकट होने पर मन में उठने वाली चिंतन धारा नकारात्मकता लिए होती है उसे ही चिंता कहा गया है। सांचारिक दृष्टि से विचार करने पर देखते हैं कि चिंता के कई आयाम हैं। चिंता में जहां व्यक्ति खुद को असहाय जैसी स्थिति में पाता है वहीं इसके विपरीत चिंतन जैसी स्थिति में उसकी प्रखरता और बढ़ती है।

मोह

दृमोह शब्द से परंपरागत आषय प्रभावित और आकर्षित होने, मूर्च्छा जैसी स्थिति और किसी तात्कालिक परिस्थिति के वषीभूत होकर मूल उद्देष्य से भटकाव से होता है किंतु नाट्यषास्त्र में मोह पर बहुत गूढ़ चिंतन दिखता है। नाट्यषास्त्रकार ने कहा है कि मोह में चौतन्यता का अभाव होता है और बहुत गहराई से विचार करें तो इस चौतन्यता का अभाव ही व्यक्ति को स्वार्थ के दलदल में धकेलता है। ऐसे भाव मन में आने पर व्यक्ति परिस्थितियों के हाथ की कठपुतली बनकर सबकुछ देखने–सुनने को अभिषप्त हो जाता है।

स्मृति

स्मृति का आषय याद्दाष्त से है। नाट्यषास्त्रकार की सम्मति में सुखदुख देने वाले भावों की याद को स्मृति कहते हैं। स्मृतियां काल सापेक्ष हैं। ये अन्य बातों के अतिरिक्त यह भी इंगित करती हैं कि अतीत को पकड़े रहने में भलाई नहीं है।

अतीत कितना भी सुखद या कितना भी दुःखदायी हो, भविष्य की राह का रोड़ा नहीं बन सकता। हम जो आज कर रहे हैं उसी का प्रतिफल भविष्य में मिलेगा। स्मृतियां सचेत भी करती हैं। सांचारिक दृष्टि से यह बहुत महत्वपूर्ण बात है।

धृति

इसका सामान्य आषय धैर्य से है। भारतीय मनीषा ने धृति को बहुत प्रशंसनीय माना है। धीरज उत्तमकोटि के मनुष्य की प्रकृत्ति और प्रवृत्ति है जिसकी पहचान किसी विपत्ति के समय होती है। नीतिष्लोक (ष्लोक–89) में कहा गया है– विपत्ति में ही धैर्य की परीक्षा होती है। रामचरित मानस में तुलसीदासजी ने भी कहा है– धीरज धर्म मित्र अरु नारी, आपतकाल परिख एहि चारी...। सांचारिक दृष्टि से विचार करें तो पाते हैं कि धैर्य में ही सफलता निहित है। भारतीय मनीषा ने इसे धर्म के दस लक्षणों में पहले स्थान पर रखा है – धृति, क्षमादमौस्तेयं शौचम इन्द्रियनिग्रहः। ध ीः विद्या सत्यम् अक्रोधो दषको धर्मलक्षणम्। (मनुस्मृति दृ 6–92) नाट्यषास्त्रकार ने बताया है कि इसमें व्यक्ति प्राप्त सुखों का पूर्ण उपभोग करे किंतु जो नहीं मिला उसका शोक न करे। गते शोको न कर्तव्यो... यही धैर्यवान पुरुषों का स्वभाव है।

व्रीड़ा

व्रीड़ा में अनुचित कार्य करने की वृत्ति दिखती है। इस अर्थ में यह धृति से विपरीत आषय वाला है। नाट्यषास्त्रकार की सम्मति में व्रीडा ऐसा व्यभिचारीभाव है जो गुरुजनों के प्रति विपरीत आचरण, अपमान, प्रतिज्ञा का निर्वाह न कर पाने और पष्चात्ताप आदि विभावों से उत्पन्न होता है। इससे कर्ता के मन में पष्चात्ताप जैसा भाव आता है और वह प्रायः लज्जावष ऐसे कार्य करता है जिसमें मुंह छिपाने वाला या ऐसे ही अन्य भाव हों।

चपलता

चपलता से आषय जल्दबाजी से है। जल्दबाजी में एक तरह की नकारात्मकता होती है, बिना बिचारे काम करने का भाव चपलता है। यह राग में भी भावित होती है और द्वेष में भी। हम ज्यादा उत्साह या आनंद में हों तो क्या कर रहे हैं यह पता नहीं चल पाता और इसी प्रकार हम क्रोध तथा द्वेष में आपा खो देते हैं। नाट्यषास्त्रकार ने चपलता को नकारात्मक श्रेणी का व्यभिचारीभाव माना है।

हर्ष

किसी मनोकामना की पूर्ति होने या किसी भी प्रकार की इच्छित वस्तु की प्राप्ति पर मन में संतोष और प्रसन्नता का जो भाव आता है वही नाट्यषास्त्रकार की सम्मति में हर्ष है। इष्ट की प्राप्ति या प्राप्ति की संभावना भी हर्ष का हेतु हो सकती है। यह केवल खुद की प्रसन्नता तक ही ही सीमित नहीं है। परिवार में प्रसन्नता होने पर, गुरु–राजा और देवता के प्रसन्न होने पर भी स्वाभाविक रूप में हर्ष का भाव मन में आता है।

आवेग

यह सामान्य अर्थ में वह मानसिक स्थिति है जो अचानक किसी बड़ी घटना, आपात्काल, सुखद या दुखद समाचार की प्राप्ति, अचानक आए किसी संकट या ऐसी ही अन्य तात्कालिक परिस्थितियों से उत्पन्न होती है। तात्कालिकता इस संदर्भ से जुड़ता प्रमुख गुणधर्म है जिसकी परिणति आवेग में होती है। तत्काल उत्पन्न किसी भी परिस्थिति में व्यक्ति का व्यवहार नियंत्रित रहे इसकी सांचारिक दृष्टि से बड़ी उपयोगिता है। इसी से हमारा व्यवहार नियंत्रित होता है। अपनी भावनाएं काबू में कर पाने की क्षमता ही व्यक्ति को मजबूत बना पाती है। जिसका आवेगों पर नियंत्रण नहीं है वह व्यवहारकुषल नहीं हो सकता।

जड़ता

नाट्यषास्त्रकार ने हर प्रकार के कार्य और दायित्व के प्रति अनिच्छा भाव और निवृत्ति को जड़ता कहा है। जड़ता नकारात्मक होती है, यह यथास्थितिवादी होती है। अगर जड़ता हमारी प्रवृत्ति हो जाए तो हम किसी अनाचार, किसी अत्याचार या किसी ऐसी गलत बात का प्रतिरोध ही नहीं कर पाएंगे जिसका किया जाना आवष्यक है। प्रतिकार, प्रतिरोध और प्रतिक्रिया स्वाभाविक चेतनता की प्रवृत्तियां हैं। जनजागरूकता ने जड़ता की इस स्थिति को तोड़ा है तो इसमें संचार माध्यमों की बड़ी भूमिका रही है। संचार की दृष्टि से यह बहुत महत्वपूर्ण है।

गर्व

सामान्य अर्थों में गर्व से आषय अभिमान यानी किसी उपलब्धि पर इतराने जैसी स्थिति से और सकारात्मकता वाला होता है किंतु नाट्यषास्त्र की नजर में गर्व यह अभिमान, दर्प, गर्व और घमंड का समन्वित रूप है। इस रूप में नकारात्मक है। अधजल गगरी छलकत जाय जैसा मुहावरा ऐसी ही प्रकृति के लोगों को लक्ष्य करके प्रचलन में आया है। ये लोग दूसरों को महत्व नहीं देते, अपनी हांकते रहते हैं। दूसरों की हंसी उड़ाते हैं, उनपर प्रायः व्यंग्य वाण चलाते हैं। यह अच्छी प्रवृत्ति नहीं है। सामाजिक दृष्टि से भी खुद को दूसरों से ऊंचा समझना अनुचित बात है।

विषाद

विषाद से स्वाभाविक आषय ऐसी खिन्नता या दुःख से है जो प्रायः किसी दायित्व की पूर्ति में किसी प्रकार की अक्षमता, किसी प्रकार की साजिष या अपराध के सिलसिले में पकड़े जाने या किसी आपदा के कारण उत्पन्न होते हैं। कामना से परे स्थितियों का सामना होने पर लोग प्रायः सहज नहीं रह पाते और ऐसी स्थिति में जिस प्रकार के भावों की अभिव्यक्ति करते हैं वह विषाद से संबंधित होता है। जिनमें सहिष्णुता है वे येनकेन प्रकारेण अपना तकलीफ सहन कर जाते हैं लेकिन जिनमें धीरज की कमी होती है वे प्रायः बेचौन होते रहते हैं।

औत्सुक्य

यह मनुष्य का स्वभाव है कि वह जिसे अपना समझता है उसके बारे में निरंतर सोचता रहता है। जो दूर हैं उनके बारे में जानने की इच्छा से उनका स्मरण ही नाट्यषास्त्रकार की नजर में उत्सुकता है। संचार के तंत्र में जितनी प्रगति हुई है वह सब मनुष्य की इसी उत्सुकता का परिणाम है, और कुछ नहीं। जिस उत्सुकता पर संचार की पूरी दुनिया टिकी है उसका जिक्र हजारों साल पहले लिखे गए ग्रंथ में संचारीभाव के रूप में आना निष्चित रूप से आचार्य भरतमुनि की संचारदृष्टि की व्यापकता का परिचायक है। भारतीय मनीषा ने जिज्ञासा को ही ज्ञान और अन्वेषण का मूल बिंदु कहा है और यह जिज्ञासा मूलतः उत्सुकता ही है।

निद्रा

निद्रा शरीर की वह दषा या अवस्था है जब व्यक्ति की कुछ वाह्य गतिविधियां और उसकी चेतनाषक्ति थोड़ी देर के लिए सुषुप्तावस्था में चली जाती है। यह केवल शारीरिक परिवर्तन नहीं बल्कि मानसिक, मनोवैज्ञानिक और बहुत हद तक परामनौवैज्ञानिक स्थिति भी है। यह सामाजिक और सांस्कृतिक अवस्था भी है। जन–जागरण का संदर्भ भी इसी से जुड़ता है। सांचारिक रूप से विचार करें तो निद्रा वर्तमान की वास्तविकताओं से मुंह फेरने वाली स्थिति भी है। यह किसी भी समाज की प्रगति को बाधित करती है जबकि इसके उलट जब हम जागरूक होते हैं तो हम अपने लिए प्रगतिपथ तैयार करते हैं। मीडिया के जरिए जनजागरूकता के विविध आयाम इस प्रकरण से सीधे जुड़ते हैं।

अपस्मार

अपस्मार मस्तिष्क से जुड़ी बीमारी है। सांचारिक दृष्टि से विचार करने पर हम पाते हैं कि इसका प्रभाव एक व्यक्ति तक सीमित नहीं रहता। यह नाट्यषास्त्रकार के सामाजिक दृष्टिकोण को इंगित करने वाला प्रकरण भी है। शारीरिक, आर्थिक और राजनीतिक बल के साथ समाज के मानसिक बल का भी महत्वपूर्ण स्थान है और यह अकारण नहीं है कि अधिकतर प्रार्थनाएं इष्ट से मानसिक बल प्रदान करने की अभ्यर्थना से जुड़ी हैं।

सुप्त

नींद और सुप्त सामान्य रूप में समानार्थी प्रतीत होते हैं किंतु नाट्यषास्त्र ने इनका सूक्ष्म अंतर बताया है। सुप्तावस्था में व्यक्ति की चेष्टाओं का शमन हो जाता है। निद्रा इससे पूर्व की स्थिति है। सुप्तावस्था का अलग विवरण बताता है कि नाट्यषास्त्रकार की दृष्टि सूक्ष्म है। कला और संस्कृति के संदर्भ में व्यक्ति की भाव–भंगिमाओं का, उसकी मुद्राओं का जो गहन अर्थ है वह सामाजिक दृष्टि से चिंतन की पृष्ठभूमि तैयार करता है।

विबोध

स्वप्न से जागने की अवस्था विबोध है अर्थात् वह स्थिति, जिसमें व्यक्ति को अपने

अस्तित्व का बोध हो जाए। नाट्यषास्त्रकार ने स्वप्न की स्थिति के भंग होने पर जागने वाली स्थिति को विबोध कहा है। यह सुप्तावस्था से जागृतावस्था में आना भर ही नहीं है। इसमें अपने अस्तित्व का बोध होना भी समाहित है। जिसे अपने होने का अहसास सही मायने में हो गया उसका दिग्भ्रमित होना असंभव है। सांचारिक दृष्टि से विबोध इसी कारण बहुत महत्वपूर्ण संचारीभाव है। सोते लोगों को जगाना संचार माध्यमों का प्रमुख उद्देष्य होता है। जनसंचार के जितने माध्यम हैं सब मूलतः इसी प्रक्रिया में लगे होते हैं। इस दृष्टि से विबोध का निहितार्थ बहुत गहराई वाला है।

अमर्ष

अमर्ष का सामान्य आषय क्रोध, कोप, तिरस्कार से उत्पन्न क्षोभ और दृढ संकल्प आदि से है। यह तिस्कार जैसी स्थिति में भी बड़ा काम करने या कर सकने की सत्प्रेरणा हो सकती है और किसी का अहित करने वाली दुष्प्रेरणा भी। जब व्यक्ति सकारात्मक होगा तो वह उन गतिविधियों में संलग्न होगा जिसकी उससे अपेक्षा की जा रही है। यह व्यक्ति सुधार से जुड़ी प्रक्रिया भी हो सकती है। न्यायालय के दंड विधान, निंदा–निंदन या भर्त्सना आदि का अवलंबन इसी कारण लिया जाता है। यह अमर्ष से जुड़ा सकारात्मक पक्ष है और सुधार की दृष्टि से महत्वपूर्ण भी। जनमाध्यमों के जितने भी स्वरूप हैं उसमें समाज सुधार से संबंधित सामग्री का अभिप्राय व्यक्ति या समाज में सुधार की प्रक्रिया को बल देना है। दूसरे का अहित करने या ऐसा करने की भावना भी मीडिया से ओझल नहीं है। समाज में सकारात्मक और नकारात्मक दोनों गतिविधियां चलती रहती हैं। मीडिया का कंटेंट दोनों के संयोग से बनता है।

अवहित्थ

मन के भावों को चतुराई से छिपा लेना सामान्य अर्थों में अवहित्थ है। नाट्यषास्त्रकार ने भी इसे गोपनरूपा कहा है। यह अपने आप में बहुत गहरी बात है कि हम अपने भावों को बाहर प्रकट न होने दें। हम सोचते कुछ रहें और सामने वाले को इसकी प्रतीति न हो। यह सबके वष की बात नहीं। मन की गहराई में उतरते ऐसे भावों को सूचीबद्ध करना आचार्य भरत की सूक्ष्म संचारदृष्टि का संकेतक है। सांचारिक दृष्टि से विचार करें तो इस संचारीभाव का बड़ा महत्व है। इसके भी सकारात्मक और नकारात्मक पक्ष हैं। किसी पद की गरिमा के अनुकूल गोपनीयता धारण करना और घपलों–घोटालों से लेकर राजनीतिक दुरभिसंधियों तक को गोपनीयता से छिपाए रखना... दोनों इससे जुड़ता आयाम है।

उग्रता

उग्रता से स्वाभाविक आषय ऐसी स्थिति से है जिसमें व्यक्ति का खुद पर नियंत्रण नहीं रहता और वह क्रोध के आवेष में ऐसी हरकतें करता है जिससे कि दूसरे का और उसका खुद का भी नुकसान हो। सांचारिक दृष्टि में उग्रता अपराधबोध से उत्पन्न चित्तवृत्ति है। आचार्य भरतमुनि ने संचारीभावों में उग्रता का समावेष कर यह बताने की कोषिष की है कि क्षणिक मनोवृत्ति के रूप में उग्रता कितनी भी प्रभावी क्यों न हो, हम विचारवान हों तो फिर स्थिति ही बदल जाएगी। इसी कारण नाट्यषास्त्रकार ने अगले संचारीभाव के रूप में मति का उल्लेख किया है। यह क्रमनिर्धारण भी नाट्यषास्त्रकार की सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक दृष्टि का महत्वपूर्ण परिचायक है।

मति

मति से सामान्य आषय मंतव्य, वैचारिक स्पष्टता या कुछ हद तक वैचारिक प्रतिबद्धता से है। किसी प्रकरण पर अलग–अलग दृष्टिकोण स्वाभाविक हैं। कहा भी गया है– मुंडेमुंडे मतिर्भिन्नाः। मननषील व्यक्ति के अंतःकरण में तरह–तरह के विचार प्रष्फुटित होते हैं। विद्वानों का एक पर्यायवाची मतिमान भी है। नाट्यषास्त्रकार ने मति को मनःस्थिति से जोड़ते कहा है कि यह संचारीभाव की तरह व्यक्ति के मन में क्षणमात्र के लिए उत्पन्न होकर उसका पथ प्रदर्शित करता है। इसीलिए लोग प्रायः कहते हैं– मेरी तो मति मारी गई थी...। इसीलिए सन्मति की प्रार्थना का विधान किया गया है– सबको सन्मति दे भगवान...। राय का पर्यायवाची सम्मति भी है। मत शब्द का मूल इस मति में ही दिखता है जो बहुमत, जनमत, अल्पमत और सर्वसम्मत जैसे शब्दों में रूढ़ गया है।

व्याधि

व्याधि का सामान्य आषय बीमारी, रोग और ऐसी अन्य स्थितियों से है जो अस्वस्थता की निषानी है। नाट्य अगर जीवन के विविध रंगों का समुच्चय है तो इससे व्याधि या रोगों को अलग कैसे किया जा सकता है? इसके बिना पूर्णता कहां? हाल में आई कोरोना महामारी ने यह दिखाया कि इसने जीवन को बहुत नजदीक से देखने–समझने का अवसर भी दिया है। नाट्य के जरिए जीवन को समग्रता में रूपायित करने का नाट्यषास्त्रकार का प्रयास बहुत गहराई से समझने के योग्य है। यह जीवनराग को समझने का बेहतर अवसर देता है।

उन्माद

उन्माद से स्वाभाविक आषय पागलपन जैसी मनःस्थिति से है जिसमें व्यक्ति की प्रतिक्रियाओं का अंदाजा नहीं लग सकता। स्वस्थ मनोरंजन से व्यक्ति मानसिक विश्राम जैसी स्थिति में आता है और जो मानसिक रूप से स्वस्थ है वहीं समाज के लिए कुछ सकारात्मक कर पाने की स्थिति में भी होता है। सांचारिक रूप से में उन्माद पर चिंतन करें तो दिखता है कि उन्माद जैसी विकृतियां न केवल व्यक्ति बल्कि समाज के लिए भी ठीक नहीं है।

मरण

मृत्यु जीवन का परम सत्य है। सांचारिक दृष्टि से विचार करने पर देखते हैं कि मृत्यु जीवन की क्षणभंगुरता का प्रतीक होने के साथ जीवन व्यापार के तमाम उद्यमों में शरीर की महत्ता को प्रतिध्वनित करने वाला प्रक्रम है। शरीर का किसी भांति अंत होने का अर्थ है जीवन की गति का पूर्णरूपेण बाधित हो जाना। यह केवल शरीर का अंत नहीं है वरन एक इतिवृत्त की समाप्ति जैसा प्रकरण होता है। नाट्यषास्त्र में मरण नामक संचारीभाव का वर्णन विस्तार से आने के पीछे का एक हेतु समाज में मृत्यु के महत्व को प्रतिपादित करने से भी जुड़ता है।

त्रास

त्रास का सामान्य आषय भय जैसी स्थिति से है। विषेषकर वैसे भय से जो अत्यंत भयंकर ध्वनि से उत्पन्न होता है। रणभेरी की आवाज वीरों को प्रायः रोमांचित करती है किंतु कायरों के लिए यह आवाज भी त्रास देने वाली होती है। रामचरितमानस के भगवान राम का चित्रण वीरषिरोमणि और धैर्य की प्रतिमूर्ति के रूप में हुआ है लेकिन एक अवसर पर वे भी भय और त्रास की इस मिश्रित दषा में दिखते हैं। वर्षा ऋतु के वर्णन के दौरान मेघ गर्जना से भगवान राम के मन में उत्पन्न त्रास और भय की स्थिति को इन शब्दों में अभिव्यक्त किया है– घन घमंड नभ गरजत घोरा। प्रियाहीन डरपत मन मोरा। प्राकृतिक घटनाओं का मानव मन पर असर अनादिकाल से होता आ रहा है। प्राकृतिक शक्तियों के प्रति व्यक्ति और समाज की इस भावना का प्राकट्य आचार्य भरतमुनि ने नाट्यषास्त्र में बहुत सूक्ष्मता से किया है।

वितर्क

वितर्क से स्वाभाविक आषय किसी प्रकरण पर विषिष्ट विमर्ष, तर्क और चिंतन से है। किसी भी विषय में शंका या संदेह वाली दृष्टि ही हमें विषय के प्रति गहन चिंतन को प्रेरित करते हुए तार्किकता की ओर ले जाती है। सांचारिक दृष्टि से देखें तो तर्क–वितर्क आदि संचार की ही शैलियां हैं जिसमें किसी विषय या प्रकरण विषेष से संबंधित संदेहों का निराकरण चर्चा आदि के उपरांत होता है। तर्क और वितर्क से जुड़ा एक पक्ष विपक्ष की भावनाओं का सम्मान भी है। अपनी बात कहने के अधिकार के साथ दूसरे की बात सुनने के दायित्व में ही सुंदर समाज की परिकल्पना निहित है। इस दृष्टि से चिंतन करें तो संचार की पूरी प्रक्रिया का केंद्रीय बिंदु इसी परिकल्पना से पुष्पित और पल्लवित होती है।

संवाद-संचार के परिप्रेक्ष्य में संचारी भाव

नाट्यषास्त्र के समस्त व्याख्याकारों ने संचारीभावों की व्याख्या के क्रम में बार–बार स्पष्ट किया है कि ये मन में संचरित होने वाली ऐसी अल्पकालिक या क्षणिक मनःस्थितियां हैं जो आकाष में बिजली की भांति उत्न्न होकर दर्षक या अभिनेता दोनों की अभिव्यक्तियों की प्रकृति का निर्धारण करती है। धनंजय ने दषरूपक (4–7) में व्यभिचारीभावों की उपमा समुद्र में उठने वाली लहरों से दी है– कल्लोला इव वारिधौ। कायदे से कहें तो संचार और संवाद का स्वरूप इन संचारीभावों से ही तय होता है। अगर किसी व्यक्ति अथवा दृष्य को देखते ही मन में आनंदित करने वाला भाव आया तो स्वाभाविक है कि हमारी प्रतिक्रिया वैसी ही होगी। किसी आष्चर्यजनक घटना को देख लिया जाए तो आष्चर्य और विस्मय के भाव ही मन में

आएंगे और घटना विषेष के संदर्भ में हमारी क्रिया या प्रतिक्रिया तदनुरूप ही होगी।

संचारविदों के मतानुसार संचार की प्रक्रिया की शुरुआत प्रेषक के मन में उत्पन्न विचारों और भावनाओं से होती है। संचार के विभिन्न चरणों के उल्लेख के दौरान संचारविदों ने इस प्रश्न पर तो खूब विचार किया है कि हम संचार कैसे करते हैं लेकिन यह प्रश्न बहुत प्रमुखता से उनके सामने नहीं आया कि हम संचार क्यों करते हैं? इसी क्यों में संचार प्रक्रिया की शुरुआत का मूल छिपा हुआ है। संचारविदों ने जोर देकर कहा है कि संचार संबंधों पर आधारित एक गतिषील प्रक्रिया है। एवी शनमुगम के मुताबिक यह अनुभवों का आदान–प्रदान और संवेदनाओं–विचार और ज्ञान की साझेदारी से भी जुड़ी प्रक्रिया कही जा सकती है।

संचारीभावों के विभिन्न रूपों पर विचार करते हैं तो पाते हैं कि संवाद चाहे जिस स्तर पर हो, जिस स्तर के व्यक्ति–समूह के साथ हो, हमारे मन में पहले वे भावनाएं ही उमड़ती हैं जिनका जिक्र नाट्यषास्त्रकार आचार्य भरतमुनि ने अपने ग्रंथ में संचारीभावों के रूप में किया है। तैंतीस की संख्या वाले ये संचारीभाव अभिव्यक्ति के उद्दीपक और मुख्य कारण बन जाते हैं। हमारे मानसपटल पर उत्पन्न भावनाएं जितनी क्षणिक और कमजोर या मजबूत हों, यह साफ हो जाता है कि हमारे मन में उत्पन्न कोई भी भाव–संवेदनाएं संचारीभावों की परिधि से बाहर की नहीं होती।

स्पष्ट है कि संचारीभाव ही संचार का मूल कारणस्वरूप हैं। जैसे क्षणमात्र के लिए आसमान में कौंधने वाली बिजली क्षणमात्र का प्रकाश बिखेरकर अंधेरे में ठिठके प्राणी समुदाय को क्षणमात्र के लिए रास्ते का भान करा जाती है वैसे ही संचारीभावों में से कोई एक भाव भी मन में सहसा आकर संचार की ऐसी भावभूमि तैयार कर देता है जिससे आगे की राह खुल जाती है। इस नजरिए से संचारीभावों को संचार प्रक्रिया के प्रारंभबिंदुओं में शामिल करना ही उचित होगा।

व्यावहारिक दृष्टि से विचार करें तब भी हम पाते हैं कि चाहे आंगिक ;छवद. टमतइंसद्ध संवाद हो या वाचिक ;टमतइंसद्ध संवाद , संचारक के रूप में चाहे संप्रेषक हो या संदेषों का प्राप्तकर्ता, चाहे क्रिया या हो या प्रतिक्रिया– संचारीभावों का महत्व हम संचार के दोनों छोरों पर बराबर पाते हैं। संचार की प्रक्रिया इन्हीं दो धुरियों के बीच संपन्न होती है। इस दृष्टि से कहा जा सकता है कि यह जितना प्रेषक के लिए महत्वपूर्ण है उतना ही संचार के प्रापक के लिए भी।

कोई भी संवाद भावनाषून्य नहीं हो सकता। यहां तक कि मृतक शरीर भी हमारी प्रतिक्रिया का कारण और उद्दीपक बन जाता है जब हम शव देखकर चौंक पड़ते हैं, रो पड़ते हैं या खुद की भावनाओं पर काबू रखने में विफल होकर मूर्च्छित हो जाते हैं या ऐसी स्थिति में पहुंच जाते हैं। अपस्मार और मरण जैसे संचारीभावों का जिक्र ऐसे ही प्रकरणों के लिए हुआ है।

यह भी जरूरी नहीं है कि संवाद या संचार दो या दो से अधिक लोगों के बीच हो। किसी झील की सुंदरता देखकर मन स्वतः गुनगुनाने लगता है। पार्क की सुंदरता, कृषि मनोरम दृष्य को देखकर मन में उठने वाला आनंद भी प्रकृति से संवाद ही है। इसपर बहुत लिखा जा सकता है लेकिन सबका निष्कर्ष यही होगा कि संवाद और संचार पर संचारीभावों का गहरा प्रभाव पड़ता है। जैसा भाव मन में आता है हम वैसी ही अभिव्यक्ति करते हैं, वैसी ही प्रतिक्रिया देते हैं। भाषा यद्यपि संचार का महत्वपूर्ण माध्यम है किंतु संवाद प्रक्रिया में भाषा की अपेक्षा भी नहीं होती। कई बार आंगिक संवाद में ही संचार की प्रक्रिया पूरी हो जाती है। संभवतः यही स्थिति इस गीत में उल्लिखित है– नजर ही नजर में मुलाकात हो गई, रहे चुप दोनों और बात हो गई।

संवाद की इस प्रक्रिया में भी शृंगार स्थायी भाव वाले विभिन्न संचारीभावों का प्रभाव पाते हैं। इससे भी कहा जा सकता है कि संचार की प्रकृति का निर्धारण करने में संचारीभावों की महती भूमिका है।

केवल संचार और संवाद ही नहीं, जनसंचार के माध्यमों पर भी संचारीभावों का पर्याप्त असर और प्रभाव दिखता है। चाहे आंगिक अभिव्यक्ति हो या वाचिक, सूक्ष्म विष्लेषण करने पर हम पाते हैं कि अभिव्यक्ति में जान तभी आएगी जब यह भावानुकूल हो। कब किस बात को कैसे अभिव्यक्त करना है इसका ध्यान ही जनसंचार माध्यमों को सफलता का कारक होता है। कंटेंट चयन से लेकर प्रस्तुतीकरण तक में दर्षक की भावनाओं का ध्यान रखने के पीछे संचारीभावों को महत्व देने की प्रवृत्ति ही दिखती है। समाचार हो, कोई वीडियो हो, संगीत का अलबम हो, फिल्म हो–सिनेमा हो या न्यू मीडिया के संदर्भ में कोई सामग्री–विचार, प्रापक और प्रेषक के बीच की कड़ी के रूप में भावनाओं के विभिन्न प्रतिरूपों के रूप में इन संचारीभावों का महत्व हम प्रमुखता से समझ सकते हैं।

संदेषों की ग्राह्यता और इनपर मनोनुकूल टिप्पणियों का संसार भी अनोखा है। भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए चित्ररूप में तैयार प्रतीकों को हम ईमोजी के नाम से जानते हैं। इसकी शुरुआत जापान से हुई है तथा पूरी दुनिया में इनकी स्वीकार्यता ऐसी बढ़ी कि आज ये दिल की भाषा बन गए हैं। अवसर विषेष से जुड़े स्टीकर और अन्य प्रतीकों की भी लंबी शृंखला उपलब्ध है।

निष्किर्ष

प्रस्तुत शोध अध्ययन में हमने संचार की मूल प्रवृत्ति के उद्दीपक के साथ संचार माध्यमों के विकास में संचारीभाव के महत्व का आकलन करने की कोषिष की है। यह देखा गया कि मानसिक संवेदनाएं–संवेग और भावनाओं का संवाद की दृष्टि से बड़ा महत्व है। हम जो भी करते हैं अपने संवेगों के मुताबिक करते हैं। मन में उत्पन्न ये भावनाएं क्षणिक भले हों किंतु हमारी सारी प्रतिक्रियाएं इन्हीं से निर्देषित होती हैं। ये ही संचार–संवाद की मूल हैं।

संचार के समग्र परिदृष्य में इन संचारीभावों की महत्ता इस बात से सिद्ध हो जाती है कि मन की भावनाओं की अभिव्यक्ति प्रारंभिक रूप में जिस प्रकार होती है वे ही संचारीभाव कहे गए हैं। ये क्षणिक रूप में उत्पन्न होकर मन को संचार–संवाद के लिए तैयार कर देते हैं। संवाद–संचार की आधुनिक प्रवृत्तियों के संदर्भ में भी संचारीभावों का महत्व इस बात से स्पष्ट हो जाता है कि संवाद में प्रयुक्त प्रतीकों–प्रतीक चिह्नों और अन्य तौर–तरीकों का मूल भी संचारीभाव की परिधि से बाहर का नहीं है। संचारीभावों के रूप में जिन तैंतीस भावों का उल्लेख है वे इतनी सूक्ष्मता से निरूपित हैं कि मन का कोई भाव, और भावाभिव्यक्ति से जुड़ती कोई बात इनसे इतर नहीं है। निष्कर्ष रूप में जोर देकर कहा जा सकता है कि नाट्यषास्त्र में वर्णित संचारीभावों का संचार के वर्तमान परिदृष्य में अत्यधिक महत्व है। इनके अभाव में संचार की प्रक्रिया ही शुरू नहीं हो सकती। यानी संचार का जो भी रूप हो, इसकी शुरुआत संचारीभावों के उत्पन्न होने से ही होती है। यही संचारीभावों की महत्ता को सिद्ध करने के लिए पर्याप्त है।

संदर्भ

1. Raman, S. V. A. (2016). Bharatiya sanchar drishti: Ek nai drishti (A new perspective on Indian communication). Tarun Prakashan.
2. Schramm, W. (1954). How communication works. In W. Schramm (Ed.), The process and effects of mass communication (pp. 211-212). University of Illinois Press.
3. Undakat, A. K. (2006). Sanchar ke sat sopan (Seven steps of communication). Vani Prakashan.
4. Dvivedi, P. N. (Ed.). (2015). Natyashastra dvitiya bhaga: Abhinava bharati se yukta manorama tika (Chapter 8, Shloka 8-9) [Natyashastra: Second part with Abhinava Bharati commentary] (Ganganath Jha Granthmala-14). Sampurnanand Sanskrit Vishwa vidyalaya.
5. Mishra, B. L. (1988). Bharat aur unka Natyashastra (Adhyay drishyavan prakaran) [Bharata and his Natyashastra (Chapter on visual presentation)]. Uttar Madhya Sanskritik Kshetra.
6. Shukla, S. S. (2020). Natyashastra pratham bhaga: Pradeep Hindi व्याख्या सहित (Natyashastra: First part with Hindi commentary) [Chaukhamba Sanskrit Sansthan].
7. Dvivedi, P. N. (Ed.). (2015). Natyashastra dvitiya bhaga: Abhinava bharati se yukta manorama tika (Chapter unspecified) [Natyashastra: Second part with Abhinava Bharati commentary] (Ganganath Jha Granthmala-14). Sampurnanand Sanskrit Vishwa vidyalaya.
8. https://courses.lumenlearning.com/suny-jeffersoncc-sta101/chapter/chapter-9-overview/
9. https://www.researchgate.net/publication/336561000_A_Systematic_Review_of_Emoji_Current_Research_and_Future_Perspectives
10. Anderson, P. A., & Guerrero, L. K. (1998). Handbook of communication and emotion: Research, theory, applications, and contexts. Academic Press.
11. Littlejohn, S. W., & Foss, K. A. (Eds.). (2009). Handbook of interpersonal communication (3rd ed.). SAGE Publications, Inc.

HOW TO CITE THIS ARTICLE: कुमार, प्र., पांडेय, प्र. कु. (2024). नाट्यषास्त्र में वर्णित संचारीभाव का संचार के वर्तमान परिदृष्य में महत्वः एक अध्ययन. *Journal of Communication and Management*, 3(2), 131-137. DOI: 10.58966/JCM2024328